जींद में किसानों ने खोदा दुष्यंत का हेलीपैड जेजेपी के स्थानीय कार्यकर्ता बिलों में घुसे

सुशील मानव

हरियाणा में जींद जिले के उचाना में किसानों ने उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के उतरने के लिए बनाये गये हेलीपैड को फावड़े से खोद डाला और 'दुष्यंत चौटाला गो बैक' के नारे लगाए। जिसके चलते दुष्यंत चौटाला का दौरा रद्द कर दिया गया। वहीं जींद के आंदोलित किसानों का कहना है कि जब तक दुष्यंत चौटाला किसानों का समर्थन नहीं करते तब तक उन्हें इस क्षेत्र में घुसने नहीं देंगे। किसानों ने कहा कि डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला इस्तीफा देकर किसानों के बीच में आएं। यहां जो भी नेता आएगा उसका इसी तरह विरोध किया जायगा। बता दें कि हरियाणा के उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला को अपने किसी परिचित के एक निजी शादी समारोह में जींद आना था, और उनके हेलीकॉप्टर को उतरने के लिए हेलीपैड बनाया गया था। लेकिन उनके आगमन से कुछ ही घंटे पहले किसानों ने हेलीपैड को खोदकर तहस-नहस कर दिया। वहीं पुलिस मामले की जांच में जुटी है। 2019 के विधानसभा चुनाव में दुष्यंत चौटाला ने अपने ही नेतृत्व वाली जननायक जनता पार्टी (JJP) से जींद के उचाना से चुनाव लड़ा था। उन्होंने भाजपा के वरिष्ठ नेता बीरेंद्र सिंह की पत्नी प्रेम लता को 47452 वोटों से हराया था।

गौरतलब है कि बीते दिनों हरियाणा के जींद में ही 40 खापों की महापंचायत में जजपा और निर्दलीय विधायकों पर भाजपा से समर्थन वापसी के लिए दबाव बनाने का फैसला किया गया था।

मुख्यमंत्री खट्टर को काले झंडे दिखाने वाले 13 किसानों पर हत्या के प्रयास, दंगे का एफआईआर

कल मंगलवार को प्रदर्शनकारी किसानों के एक समूह ने हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को उस वक्त काले झंडे दिखाए थे, जब उनका काफिला अंबाला शहर के अग्रसेन चौक से गुजर रहा था। उन्होंने सरकार के खिलाफ नारेबाजी भी की थी। खट्टर आगामी निकाय चुनावों के लिए पार्टी के उम्मीदवारों के समर्थन में जनसभा को संबोधित करने के लिए शहर में आए थे। लेकिन किसानों के विरोध के बाद उन्हें बैरंग ही लौटना पड़ा था।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के काफिले को रोकने, काले झंडे दिखाने के मामले में हरियाणा पुलिस ने 13 किसानों के खिलाफ हत्या और दंगे के प्रयास का मामला दर्ज किया है।

किसानों के खिलाफ अंबाला में ही मामला दर्ज किया गया है। हरियाणा पुलिस ने आज बुधवार को कहा कि कुछ किसानों ने मुख्यमंत्री के काफिले की ओर बढ़ने की कोशिश की और कुछ समय के लिए रास्ता अवरुद्ध कर दिया था। पुलिस के मुताबिक उनमें से कुछ प्रदर्शनकारियों ने कुछ वाहनों पर लाठियां भी बरसाईं थी।

11 विपक्षी दलों ने साझा बयान जारी कर संसद सत्र बुलाने की मांग की

कांग्रेस सहित 11 दलों के नेताओं ने आज गुरुवार को किसान आंदोलन और कृषि कानूनों पर बहस के लिए संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग की है। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष व सासंद राहुल गांधी के अलावा एनसीपी प्रमुख शरद पवार, सपा प्रमुख अखिलेश यादव, डीएमके नेता टीआर बालू, आरजेडी नेता तेजस्वी यादव सहित 11 दलों के नेताओं ने किसान कानून पर तत्काल संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग करते हुए साझा बयान जारी किया। विपक्षी दलों के नेताओं के अनुसार आने वाले दिनों में वे इस मांग को और तेज करेंगे। मालूम हो कि सरकार ने कोविड-19 महामारी के कारण संसद के शीतकालीन सत्र को टाल दिया।

वहीं आज दोपहर संयुक्त किसान मोर्चा की तरफ से एक वेबिनार आयोजित किया गया। 4 बजे तक चले इस वेबिनार में बड़ी संख्या में किसान जूम एप के लिंक के जरिए शामिल हो कर किसान नेताओं से सवाल पूछने की सहूलियत और सलाहियत दी गई।

विधानसभा जाएंगे कांग्रेस विधायक

मध्यप्रदेश विधानसभा का तीन दिवसीय सत्र सोमवार 28 दिसंबर से शुरु हो रहा है। मध्य प्रदेश कांग्रेस विधायक दल के सदस्य महंगाई एवं तीन नये कृषि कानूनों के विरोध में सोमवार को ट्रैक्टरों में बैठकर विधानसभा पहुंचेंगे। मध्य प्रदेश के पूर्व मंत्री हर्ष यादव ने मीडिया को बताया कि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं मध्य प्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष कमलनाथ ने पार्टी के सभी 95 विधायकों से 28 दिसंबर की सुबह पार्टी के भोपाल स्थित मुख्यालय पहुंचने को कहा है। उन्होंने आगे बताया कि सभी विधायक केन्द्र सरकार के तीन नये कृषि कानूनों एवं महंगाई के विरोध में ट्रैक्टरों में बैठकर विधानसभा सत्र में भाग लेने जाएंगे।

आंदोलनकारी किसानों के लिए टिकरी बॉर्डर पर खुला मॉल

सिंघु और टिकरी बॉर्डर पर जारी किसान आंदोलन आज 29वें दिन प्रवेश कर गया है। इस बीच आंदोलन रत किसानों की दिक्कतों को दूर करने की जिम्मेदारी उठाते हुए खालसा ऐड ने टिकरी बॉर्डर पर किसान मॉल खोला है। बता दें कि इस किसान मॉल में किसान से लेकर महिलाओं तक के सभी ज़रुरत के सभी सामान मिलते हैं। किसानों को सुई धागे से लेकर कम्बल और रजाई तक का सारा सामान यहां दिया जाता है। यहां उपलब्ध सभी सामान मुफ्त में मुहैया कराये जाते हैं। इस मॉल के बाबत खालसा एड के गुरचरण ने मीडिया को बताया है कि –"दरअसल यह सारी व्यवस्था किसानों के ज़रुरत को देखते हुए तैयार किया गया है। ताकि एक ही जगह उन्हें सभी सामान मिल सकें। इसके लिये कहीं भटकना नहीं पड़े। इस किसान मॉल में थर्मल्स, मफलर, साबुन, तेल, देसी गीजर, वाशिंग मशीन आदि सभी मुफ्त में मुहैया करवाया जाता है।"

जींद वासियों को चौटाला पुत्तर की इतनी बेइज्जती तो नहीं करनी चाहिए थी। उसका स्वागत ठीक वैसे ही करना चाहिए था जैसा खट्टर का अम्बाला वासियों ने किया था।

अर्णब गोस्वामी ने 44 दिनों में 280 बार माफ़ी माँगी

विजय शंकर सिंह

पूछता है भारत और माफी मांगता है अर्णब. अर्णब गोस्वामी और रिपब्लिक टीवी के नाम माफी मांगने का भी एक रिकॉर्ड है! रिपब्लिक भारत के दर्शकों, और सरकार समर्थकों के चहेते और सुप्रीम कोर्ट द्वारा बार बार लिस्टिंग में प्राथमिकता प्राप्त अर्णब गोस्वामी ने 44 दिनों में 280 बार माफी मांगकर, माफी मांगने का एक नया रिकॉर्ड बनाया है। फिलहाल, इस समय वे ब्रिटेन की ऑफकाम संचार रेगुलेटरी अथॉरिटी द्वारा लगाये गए बीस लाख जुर्माना भरने में बिज़ी है आर रिपब्लिक चैनल और उसके एंकर अर्णब गोस्वामी के कार्यक्रम पूछता है भारत, के दिनांक 6 सितंबर 2019 को प्रसारित एक कार्यक्रम पर इंग्लैंड की ब्रॉडकास्टिंग रेगुलेटरी संस्था ऑक्सफॉम ने आपत्ति जताई और रिपब्लिक टीवी से यह जवाब तलब किया कि, उन्होंने ऐसा कार्यक्रम जो धर्म और जाति के बीच वैमनस्यता फैलाता है को क्यों प्रसारित किया ?

रिपब्लिक टीवी ने इसे अपनी गलती मानते हुये यह कहा कि यह, ब्रॉडकास्टिंग लाइसेंस कोड के सेक्शन 3, के अंतर्गत की गयी पहली गलती है और यह गैरइरादतन यानी अनइंटेशनल की गयी है।

रिपब्लिक टीवी ने यह भी ऑक्सफॉम को सूचित किया है कि, उसने इस गलती पर माफी भी मांगी है और 26 फरवरी 2020 से 9 अप्रैल 2020 तक, प्रतिदिन, हर घंटे की माफी अंग्रेजी और हिंदी में प्रसारित की है, यानी कुल 28012 बार खेद व्यक्त करने की सूचना जनता में प्रसारित की गयी है।

अब माफीनामा पढ़ लीजिए।

माफीनामा-

संचार विभाग का संचार नियंत्रक (रेगुलेटर) ऑक्सफॉम ने 6 सितंबर 2019 को पूछता है भारत कार्यक्रम में प्रसारित एक एपीसोड में, कुछ शब्दों, जो उक्त कार्यक्रम में प्रयोग किये गए थे को आक्रामक (ऑफेंसिव) और उससे कुछ दर्शकों की भावनायें आहत हो सकती हैं, पाया। यदि उन शब्दों से किसी धर्म या किसी व्यक्ति विशेष की भावनाये आहत हुयी हों तो रिपब्लिक मीडिया टीवी नेटवर्क माफी मांगता है।

अंग्रेजो से माफी मांगकर फर्जी वीर सावरकर ने जेल से रिहाई और उम्र भर की पेंशन पायी लेकिन अर्णब को जुर्माने के साथ-साथ थूका हुआ चाटना भी पड़ रहा है

यूरोपियन कन्वेंशन ऑफ ह्यूमन राइट्स (ईसीएचआर) के अनुच्छेद 10 में, ब्रॉडकास्टर और दर्शकों के लिये अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लेख है पर यह यदि किसी की भावना को चोट पहुंचती है तो, ऑक्सफॉम, जो संचार रेगुलेटरी अथॉरटी है वह इस पर नजर रखती है। इस अनुच्छेद को लागू करते समय यह ऑफकॉम की यह जिम्मेदारी है कि वह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और दर्शकों की भावनाओ के आहत होने के बीच एक संतुलन बनाये रखे। यह उसका कर्तव्य है कि वह दोनो ही दायित्व (अभिव्यक्ति की आजादी, और किसी की भावना को आहत न होने देने) का निर्वहन कुशलता पूर्वक करे।

(विजय शंकर सिंह पूर्व आईपीएस है)

पल्ला की झुग्गियों तक आते-आते मोदी की उज्जवला योजना दम तोड़ देती है

फरीदाबाद (ममो) : धीरज नगर टीटू कालोनी थाना पल्ला की झुग्गियों में बीते 19 दिसम्बर को आग लगने से 12 झुग्गियाँ जल कर खाक हो गईं और इनमे बिट्टू (पाँच साल) और टीटू (तीन) साल के साथ-साथ दो बकरियाँ भी जल कर मर गईं।

30 वर्ष के राजीव और उनकी पत्नी अमृता नालंदा बिहार के रहने वाले हैं और वहाँ कोई रोजगार न मिलने के चलते फरीदाबाद में पिछले 8 साल से कचरा बीनने का काम करते थे। कुछ दिनों से फरीदाबाद में घर-घर कचरा उठाने वाली कंपनी ईको ग्रीन की गाड़ियों में कचरा उठाने का काम करते रहे। इन्ही की तरह के करीब 70 परिवार टीटू कालोनी में कचरा उठाने का काम करते हैं। क्योंकि कचरे को फैलाना पड़ता है इसलिए इन लोगों को कोई मकान किराये पर लेकर रहना सुहाता नहीं और न ही कोई इन्हे किराये का मकान रिहाइशी इलाके में देता है।

राजीव और अन्य साथियों ने मिलकर पल्ला गाँव के एक आदमी से उसका खेत 15 हजार रुपये महीने किराये पर ले लिया। खेत में पत्नी की झुग्गियाँ बना कर 70 परिवार अपना जीवन बसर करते हैं। जो कचरा बीन कर दिन भर में इकट्ठा होता है उसे खुले में झुग्गी के सामने ही फैलाया जाता है ताकि वह सूख सके और बाद में रीसाइकिल करने वाली कंपनियों को उनकी जरूरत के मुताबिक बेच दिया जाता है जो दाम कंपनियां तय करती हैं उनपर। इस तरह राजीव और अमृता दिन के 150 से 200 रुपये कमा पाते हैं।

सुबह 7:40 पर अचानक राजीव को पड़ोसियों का फोन आया कि झुग्गी में आग लग गई। राजीव ने बताया कि 100 नंबर मिलाने और फायर वालों को फोन करने पर न किसी ने फोन उठाया और न ही खुद से ही कोई आया। किसी तरह आग बुझाई गई। आग में राजीव के दोनों बच्चे फंस गए थे

जिन्हे बचाने के प्रयास असफल रहे। साथ ही दो बकरियाँ भी जल कर मर गईं। इन सबके साथ-साथ झुग्गी में रखे जमा पैसे और बर्तन से लेकर कपड़े सब जल गया। कड़ाके की इस ठंड में 12 झुग्गी वाले खुले में रहने को मजबूर हैं और उनके पास किसी तरह की कोई मदद प्रशासन की तरफ से अब तक नहीं पहुंची है। आस-पड़ोस के लोगों और कुछ समाज सेवी संस्थाओं के प्रयास से एक टेंट लगाया गया है और सामूहिक रसोई से उनका गुजारा चल रहा है।

मौका-ए-वारदात पर आए पल्ला थाना के एसएचओ ने उल्टे इन गरीबों को डांट पिलाते हुए कहा कि तुम कबाड़े में रहते हो तो यही होगा। यूं तो टाउन प्लानर के साथ-साथ प्रधानमंत्री मोदी से पूछा जाना चाहिए कि सबका साथ सबका विकास में ये लोग कैसे छूट जाते हैं। इस एक घटना ने प्रधानमंत्री मोदी की योजनाओं की कलई खोल कर रख दी।

200 रुपये कमाने वाले व्यक्ति के लिए 700 रुपये का सिलेंडर लेकर खाना बनाना असंभव काम है। मन मोटा करके सिलेंडर लेने की सोचे भी तो उसका कनेक्शन ले पाना लंका जलाने से कम नहीं और ले भी ले तो जिस दाम का सिलेंडर मोदी जी बेच रहे हैं उसे खरीदना अब अच्छे अच्छों के बस की बात नहीं। एकमात्र उपाय पास के जंगल से रविवार के दिन हफ्ते भर की लकड़ी इकट्ठा करके पूरे हफ्ते चूल्हे पर खाना बनता है। अधिक संभावना है कि चूल्हे की ही कोई चिंगारी छिटक कर पत्नी में लगी और आग ने राजीव के दोनों बच्चों की जान ले ली।

सवाल है कि जब उज्जवला गैस सिलेंडर का इतना भयानक प्रचार मोदी ने किया था तो क्यों इन्हे सिलेंडर नहीं मिला। पत्नी की झुग्गी में बस रहे राजीव और उनके जैसे लाखों तक प्रधानमंत्री आवास योजना का मकान होता तो तो इनके बच्चे आग में झुलस कर न मरे होते। सारे भारत को स्वच्छ रखने जा जिम्मा जिनके सिर है वे राजीव जैसे लोग ही हैं पर खुद ही अमानवीय हालातों में रहने को अभिशप्त हैं।

शौचालय के नाम पर जंगलों और सड़कों के किनारे ही ठिकाना मिलता है। जिस स्थान पर ये खाना बनाते हैं वह इतना गंदगी में डूबा है जिसका अंदाजा लगाना संभव नहीं। खैर आग लगी और उसमे दो बच्चे जल कर भस्म हुए। इसपर पूरे फरीदाबाद में शोर नहीं हुआ देश की तो बात ही क्या की जाए। प्रशासन की प्लैनिंग में ही यह लोग शामिल नहीं तो इनके मरने का कोई मुआवजा भी क्यों ही शामिल होगा।

नाम न छापने की शर्त पर एक व्यक्ति ने बताया कि पुलिस ने इन्हें कहा है कि यदि तूने किसी को बताया कि आग चूल्हे से लगी तो तू ही बंद कर दिया जाएगा। अब इन पीड़ितों का कहना है कि आग किसी ऊपरी हवा या मायावी कारणों से लगी है। बस प्रशासन ने अपना गला छुड़ा लिया और इनको भी इसी से संतुष्टि है कि आग मायावी शक्ति ने लगाई क्योंकि इस जमीन पर पहले कब्रिस्तान था। इन्ही अंधविश्वासों में सरकारें चल रही है और देश विकास कर रहा है।